ऑनलाइन
हिंदी-शिक्षण

समास और
उसके भेद

1.एकलव्य ने अँगूठा काटकर गुरु के लिए दक्षिणा दी।

एकलव्य ने अँगूठा काटकर गुरुदक्षिणा दी।

2. महान है जो देव उन्हें पुष्प चढ़ाओ।

महादेव को पुष्प चढ़ाओ।

3. चार राहों का समूह है, सावधानी से चलो।

चौराहा है, सावधानी से चलो।

समास

अनेक शब्दों को **संक्षिप्त** करके नए शब्द बनाने की **प्रकिया** समास कहलाती है।

दूसरे शब्दों में- कम-से-कम शब्दों में **अधिक-से-अधिक** अर्थ प्रकट करना 'समास' कहलाता है।

- समास के नियमों से निर्मित शब्दों को समस्तपद कहते हैं।
- **सामासिक** शब्दों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना **समास-विग्रह** कहलाता है।
- **विग्रह** के पश्चात **सामासिक** शब्दों का लोप हो जाताहै

जैसे-राजपुत्र- राजा का पुत्र।

पूर्वपद और उत्तरपद समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे-गंगाजल गंगा+जल, जिसमें गंगा पूर्व पद है, और जल उत्तर पद ।

समास के भेद

- तत्पुरुष समास
  - कर्मधारय समास
  - द्विगु समास
- अव्ययी भाव समास
- द्वंद्व समास
- बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

जिस समास का पूर्व पद प्रधान हो और वह अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह
आजीवन	जीवन-भर
आमरण	मरण तक
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
भरपेट	पेट भरकर
हररोज़	रोज़-रोज़
रातोंरात	रात ही रात में
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
बेशक	शक के बिना
निडर	डर के बिना
निस्संदेह	बिना संदेह के

तत्पुरुष समास और उसके भेद

तत्पुरुष समास - जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - तुलसीदासकृत = तुलसीदास द्वारा कृत

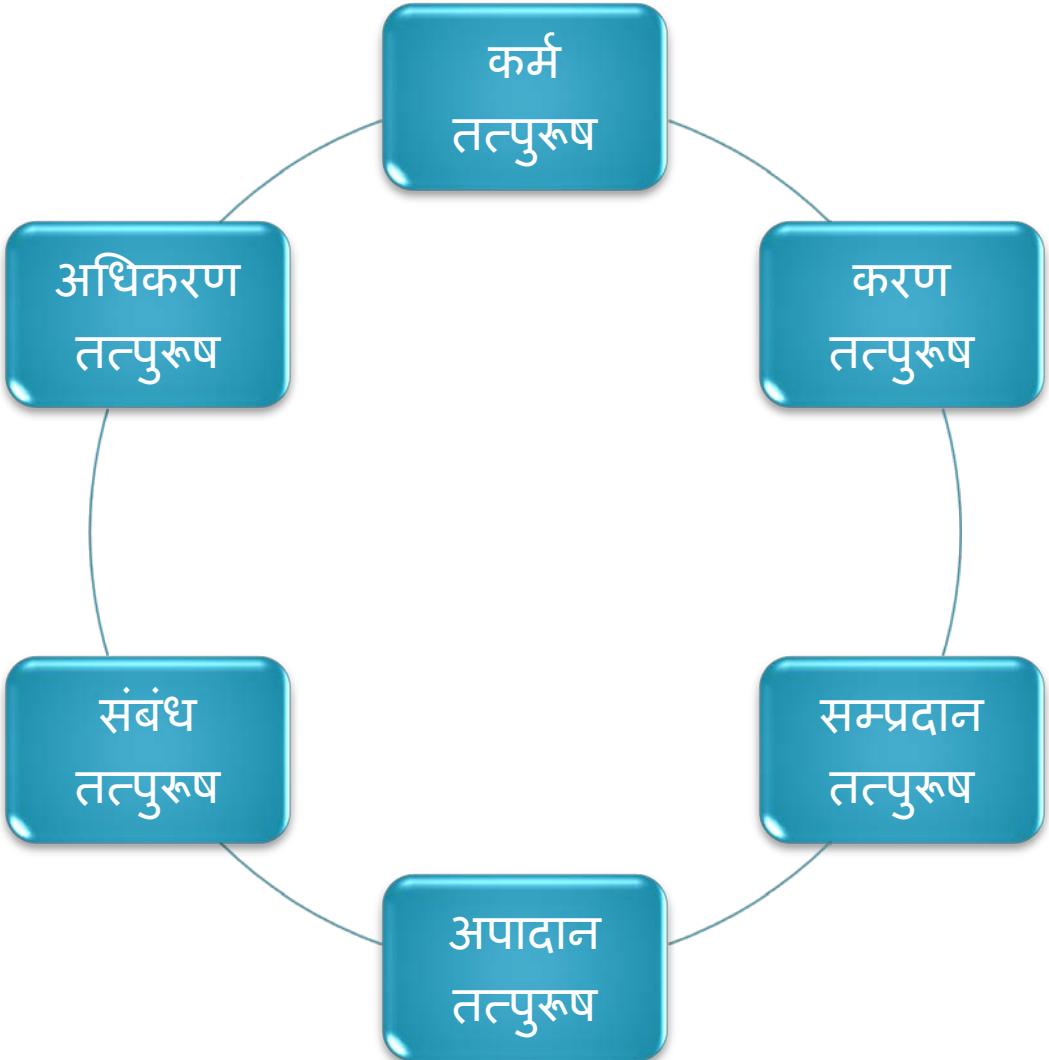

तत्पुरुष समास के उदाहरण

कर्म तत्पुरुष

समस्त पद	समास विग्रह
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	जेब को कतरने वाला

करण तत्पुरूष

समस्त पद	समास विग्रह
भयाकुल	भय से आकुल
शोकग्रस्त	शोक से ग्रस्त
मदांध	मद से अंधा
मनचाहा	

संप्रदान तत्पुरुष

समस्त पद	समास विग्रह
देशभक्ति	देश (के लिए) भक्ति
रसोईघर	रसोई (के लिए) घर
राहखर्च	राह (के लिए) खर्च
स्नानघर	स्नान के लिए घर

अपादान तत्पुरुष

समस्त पद	समास विग्रह
देशनिकाला	देश से निकाला
कामचोर	काम से जी चुरानेवाला
धनहीन	धन से हीन
पापमुक्त	पाप से मुक्त
जलहीन	जल से हीन

संबंध तत्पुरुष

समस्त पद	समास विग्रह
सेनापति	सेना का पति
पराधीन	पर के अधीन
राजदरबार	राजा का दरबार
श्रमदान	श्रम का दान
राजपुत्र	राजा का पुत्र

अधिकरण तत्पुरुष

समस्त पद	समास विग्रह
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
नरोत्तम	नरों (में) उत्तम
पुरुषोत्तम	पुरुषों (में) उत्तम
दानवीर	दान (में) वीर
शोकमग्न	शोक में मग्न

कर्मधारय समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है।

(विशेषण-विशेष्य)

समस्त पद	समास विग्रह
पीतांबर	पीत है जो अंबर
परमेश्वर	परम है जो ईश्वर
नीलकमल	नील है जो कमल
महात्मा	महान है जो आत्मा

(उपमान-उपमेय)

समस्त पद	समास विग्रह
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
वचनामृत	वचन रूपी अमृत
घनश्याम	घन के समान श्याम
चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख

नञ् तत्पुरुष समास

जिस समास में पहला पद निषेधात्मक हो उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे असंभव , असभ्य, अन्याय , अभाव

समस्त पद	समास विग्रह
असंभव	न संभव
असभ्य	न सभ्य
अन्याय	न न्याय
अभाव	न भाव

द्विगु समास

जिस समस्त.पद का पूर्वपद संख्यावाचक होए वह द्विगु समास कहलाता है।

समस्त पद	समास विग्रह
दोपहर	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	तीनों लोको का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समूह
दुअन्नी	दो आनों का समाहार
पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
पंजाब	पाँच आबों (नदियों) का समूह
पंचरत्न	पाँच रत्नों का समूह
नवरात्रि	नौ रात्रियों का समूह

द्वंद्व समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर और , अथवा , या , एवं योजक चिह्न लगते हैं वह द्वंद्व समास कहलाता है।

समस्त पद	समास विग्रह
रात-दिन	रात और दिन
सुख-दुख	सुख और दुख
दाल-चावल	दाल और चावल
भाई-बहन	भाई और बहन
माता-पिता	माता और पिता
ऊपर-नीचे	ऊपर और नीचे

बहुव्रीहि समास

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
दशानन	दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी
पीतांबर	पीला है अम्बर (वस्त्र) जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण
लंबोदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेशजी
श्वेतांबर	श्वेत है जिसके अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। जैसे - 'नीलगगन' में 'नील' विशेषण है तथा 'गगन' विशेष्य है। इसी तरह 'चरणकमल' में 'चरण' उपमेय है और 'कमल' उपमान है।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है। जैसे - 'चक्रधर' चक्र को धारण करता है जो अर्थात 'श्रीकृष्ण'।

कुछ अन्य उदाहरण------

नीलकंठ - नीला है जो कंठ - (कर्मधारय)
नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव - (बहुव्रीहि)

लंबोदर - मोटे पेट वाला - (कर्मधारय)
लंबोदर - लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश - (बहुव्रीहि)

महात्मा - महान है जो आत्मा - (कर्मधारय)
महात्मा - महान आत्मा है जिसकी अर्थात विशेष व्यक्ति - (बहुव्रीहि)

कमलनयन - कमल के समान नयन - (कर्मधारय)
कमलनयन - कमल के समान नयन हैं जिसके अर्थात विष्णु - (बहुव्रीहि)

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है
जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

जैसे-

चतुर्भुज - चार भुजाओं का समूह - द्विगु समास।
चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात विष्णु - बहुव्रीहि समास।

त्रिलोचन - तीन लोचनों का समूह - द्विगु समास।
त्रिलोचन - तीन लोचन हैं जिसके अर्थात शिव - बहुव्रीहि समास।

दशानन - दस आननों का समूह - द्विगु समास।
दशानन - दस आनन हैं जिसके अर्थात रावण - बहुव्रीहि समास।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1.'नीला है जो कंठ' यह किस समास का उदाहरण है ?
(क) कर्मधारय (ख)बहुव्रीहि (ग)तत्पुरुष (घ)अव्ययीभाव

2. 'घुड़दौड़' का समास विग्रह बताइए |
(क)घोड़े जैसी तेज़ दौड़ (ख)घोड़े की दौड़ (ग)दौड़ने वाला घोड़ा (घ)घोड़ा और दौड़

3. 'देशनिकाला' में कौन –सा समास है ?
(क)तत्पुरुष (ख)द्विगु (ग)द्वंद्व (घ)कर्मधारय

4. 'असभ्य' में कौन –सा समास है ?
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) नञ् (घ) कर्मधारय

प्रश्न 2. निम्नलिखित पदों का समास विग्रह करें और भेद बताइए-

1.गिरिधर
2.श्वेतांबर
3.नवरात्र
4 त्रिनेत्र
5 दादा-दादी

SNS
INSTITUTIONS